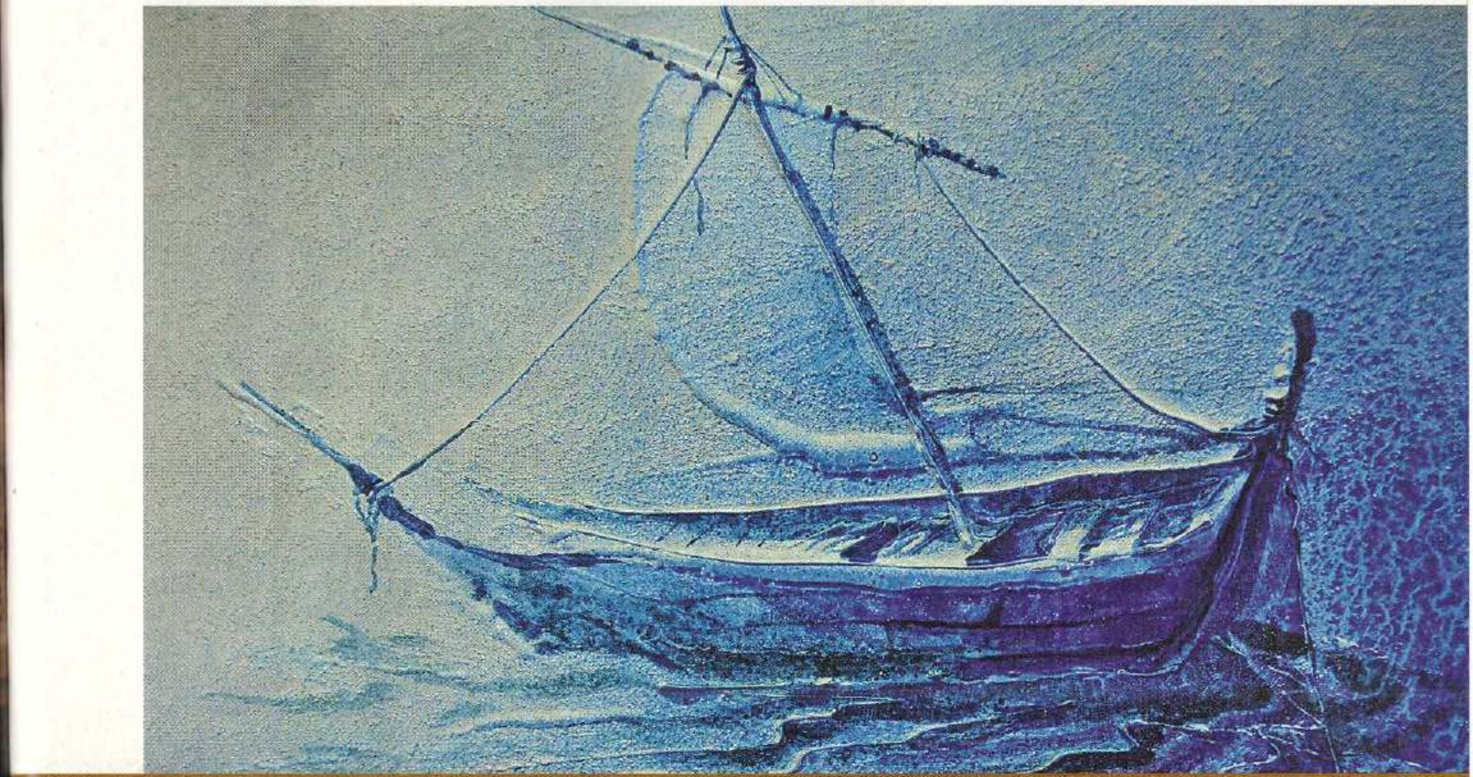

नाव

ज़िंदगी के जो पाठ, बड़े-बड़े प्रोफेसर नहीं पढ़ा सकते, वे कई बार साधारण लोग अनजाने में ही पढ़ा देते हैं। इस कहानी में हरखू मल्लाह ने भी राकेश को ऐसा ही एक महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाया। क्या था वह, जानने के लिए पढ़िए, दिल को छू लेने वाली यह ख़ूबसूरत कहानी।

'बाबूजी देख लीजिए, बस पांच हज़ार लगेंगे। वह नाव लगी है, संगम घुमा कर लाऊंगा। यहां तो बस एक धारा है, वहां दो धाराएं साफ़ दिखती हैं। सफ़ेद गंगा की और नीली धारा यमुना की। वहीं स्नान करिएगा और पूजा करके बस आधे घंटे में वापस।'

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

राकेश ने ध्यान से देखा, बच्चे नाव पर घूमना चाहते थे। वह आगे बढ़ने लगा। नाव वाला फिर बोला, 'बाबूजी देख लीजिए, कुछ कम दे दीजिएगा। अकेले नाव लेकर चलेंगे, बस आपको लेकर।' उसने ध्यान नहीं दिया। नाव वाला साथ-साथ चलने लगा। दो-तीन और साथ चल रहे थे। 'बाबूजी चलिए दो हज़ार दे दीजिए, यह सरकारी रेट है, आप चाहें तो परची देख लीजिए।'

अब राकेश बोला, 'का हो, हमका बाहरी समझे हो का, अमें हम यहीं के हैं, ई सब हमें न समझाओ, पांच सौ दूंगा चलना है तो बोलो।' उसके पीछे चल रही भीड़ दूर हो गई। अब बस एक साथ रह गया। बोला, 'साहब आप लोगों से ही हम लोग कमाते खाते हैं। चलिये, सात सौ दे दीजिएगा, बिलकुल सही कह रहा हूं।' वे बोले, 'देखो मुझे यहां के चप्पे-चप्पे का पता है, तुम अभी भी नहीं समझे कि हम लोकल हैं।' उसने सिर झुकाया और नाव लगा दी, चलिए साहब। राकेश ने बच्चों को इशारा किया नाव में बैठने का। सब लोग हंसते-खेलते नाव पर बैठ गए और नाव धीरे-धीरे किनारा छोड़ने लगी।

बच्चों ने अपने पिता का यह रूप नहीं देखा था। वे बोले, 'पापा आपने क्या कहा, कैसे वो इतने कम में...' बेटा, अपनी बात पूरी करता कि उसकी दीदी बोलीं, 'कीप क्वाइट वो सुनेगा तो क्या समझेगा।' राकेश हंसने लगे। उधर पार्वती बोलीं, 'अरे बेटा, तेरे पापा के बड़े रूप हैं। यहां आते ही इनके रंग-ढंग बदल जाते हैं। देखो, खुशी के मारे चेहरा कैसे लाल हुआ जा रहा है। क्यों जी, कितनी बार

आए हो यहां?'

'अब तुम भी न कैसी बात करती हो, हम लोग छोटे थे, तो आए दिन यहां आते थे घूमने। यहीं खेल-कूद के बड़े हुए हैं और पापा के साथ तो हमेशा आता था मैं। माघ मेले में तो हर साल नहाते थे और कुंभ में यहां बहुत भीड़ होती थी।' वह बोली, 'अब बस करो, बेटा ये शुरू हो गए तो रोकने से भी नहीं रुकेंगे।'

वह अपनी रौ में बोले जा रहा था, 'और तब पच्चीस पैसे देते थे, एक सवारी के नाव में।' तभी बच्चों का ध्यान दूसरी तरफ़ गया, ढेर सारी नाव चल रही हैं, कुछ पर झंडे बंधे हैं कुछ पर स्त्रियां गीत गा रही हैं। कुछ नाव संगम से वापस लौट रही हैं और लोग माथे पर त्रिपुण्ड लगाए सेल्फी ले रहे हैं। किसी बच्चे का मुंडन हुआ है, तो वह बार-बार अपने चिकने सिर पर हाथ फेर रहा है।

कहां महानगर और कहां यह मिडिल क्लास सिटी प्रयागराज, लेकिन राकेश तो जैसे अपनी रौ में बहे जा रहे थे। 'का नाम है तोहर हो, वह नाव चला रहे मल्लाह से बोले।' 'साहब हरखू मल्लाह।' 'हरखू, ई नाव तोहार है?'

'हां साहब, एही साल लिए हैं। पिछले कुंभ में सरकारी अनुदान मिला रहा और कमाई भी भयल। बड़ा मनई आएल रहे कुंभ में।'

बच्चे पानी चप्पू और सेल्फी में खोये थे।

'अच्छा सुनो हरखू, बच्चों को दोनों धाराएं अलग-अलग दिखानी हैं। और हां, लाओ मैं तुम्हारे साथ थोड़ी देर चप्पू चलाता हूं।'

'अरे, आए जाओ साहब, बड़े दिन बाद तो कोई ऐसा मिला है हमरी नाव पर।'

राकेश तो जैसे किसी और ही दुनिया में खो गए। उन्होंने अपनी पैंट की मोहरी मोड़ी और पहुंच गए आगे नाविक के पास, नाव चलाने के लिए। अब एक चप्पू हरखू के हाथ में और एक राकेश के। थोड़ा हिली-डुली नाव, फिर जैसे लहरों पर ही रुक गई। राकेश से चप्पू चल ही नहीं रहा था। वह बस ऊपर-ऊपर से पानी काट रहे थे, तो हरखू हंसा, 'साहब आप मुझे दीजिए, ऐसे नहीं चलेगी।' वे बोले, 'चलेगी, मैंने बचपन में बहुत बार चप्पू चलाया है। बस आदत छूट गई है और इतना कह कर जैसे ही राकेश ने चप्पू थोड़ा नीचे पानी में उतार के सीने का जोर लगाया कि नाव चल पड़ी। अब तो दोनों के खेने में रिदम बन गया और नाव हौले-हौले पानी पर तैरने लगी। पार्वती देख हंसी, 'देखो बेटा पापा का ये रंग, इस आदमी को देखकर कौन कहेगा कि यह बड़ा अफसर है।'

वह हंसा, 'बेटा, ज़रा एक फ़ोटो ले लो, मैं भी तो दोस्तो को दिखाऊंगा कि मुझे नाव चलानी आती है।' क़रीब दस मिनट चलाकर वे थक गए और चप्पू हरखू को पकड़ाते हुए बोले, 'आज मज़ा आ गया।' वह बोला, 'क्या साहब यह हमारी रोज़ी-रोटी है और आपके लिए खेल।' दोनों हंसने लगे कि देखा नाव संगम के क़रीब आ चुकी है। वे बोले, 'देखो बेटा, यह नीला पानी है यमुना नदी का और इस तरफ़ देखो, सफ़ेद जल गंगा मैया का। यह जो दो धाराएं हैं, एक-दूसरे से नहीं मिलतीं, दोनों बिलकुल अलग नज़र आती हैं। ऐसा नज़ारा कहीं और देखने को नहीं मिलता। सभी बड़े ग़ौर से देखने लगे। तभी उन्होंने हरखू से कहा, 'लाओ दोनों चप्पू मुझे दो, मैं चलाता हूं।' हरखू को भी अब तक राकेश के हुनर पर भरोसा हो गया था उसे लगा कि साहब संगम में खुद नाव खेना चाहते हैं, सो वह दोनों चप्पू देकर बगल में बैठ गया। अब राकेश जी कोशिश करने लगे कि दोनों धारा के मिलन पर, उनकी लाइन के ऊपर नाव को रख कर चलाएं, लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा था। नाव या तो गंगा में चलती या यमुना में। वह दोनों के मिलन स्थली पर नहीं चल पा रही थी। वे जितनी भी कोशिश करते हार जाते। धारा नाव को घुमाकर किसी एक धारा में कर देती।

यह देख हरखू हंसा, 'क्या साहब दो धारा में नाव चलाएंगे, आज तक कहीं किसी से भी दो धाराओं में नाव चली है, जो आपसे चलेगी।'

वह हंसे, 'हरखू मैं बचपन से ही सोचता था कि किसी दिन ऐसे नाव चलाऊंगा, लेकिन तब भी मुझे कोई ऐसे नहीं खेलने देता था, सब डांट देते कि बड़ा शरारती है, इससे चप्पू ले लो।'

'हा हा साहब, तो अब आज अपने बचपन का शौक पूरा कर रहे हैं।' वे बस मुस्कुरा दिए। उन्हें समझ आ गया था कि नाव या तो इस नदी में तैरेगी या उस नदी में। या तो गंगा में उतरेगी या यमुना में। दो धाराओं की मिलन स्थली पर नाव एक साथ तो नहीं चल सकती। उन्होंने हार मानते हुए चप्पू हरखू को सौंप दिया। हरखू ने एक छोटे-से मचान पर नाव लगा दी, जो संगम थी। सभी ने अपनी श्रद्धा के अनुसार हाथ से पानी उठाया और सिर पर चढ़ा लिया, जैसे स्नान कर लिया हो। राकेश जी तो अपनी पतलून की मोहरी मोड़ कर घुटने तक पानी में उतर गए, कोई पांच सात मिनट संगम में जैसे श्रद्धा की डुबकी लगा रहे हों। वे कभी तेज़ सूर्य को अंजुरी से भर कर जल देते, तो कभी हाथ जोड़ संगम की महानता को नमन करते। फिर उन्होंने पार्वती से कंटेनर मांग कर गंगा जल भरा और पंडित जी से माथे पर त्रिपुंड लगवा दक्षिणा प्रदान कर नाव में आ बैठे। उनका हृदय व शरीर भीतर तक आनंदित हो उठा था। चेहरे पर एक लालिमा चमक रही थी। पूरा परिवार संगम के इस अलौकिक दृश्य को देख अभिभूत था, लेकिन सब थक चुके थे। हरखू ने कहा, 'चलें साहब।' राकेश ने कहा, 'हां अब चलते हैं।' और हरखू नाव को वापस किनारे की ओर ले चला। एक बार फिर दोनों नदी के जल की धाराएं दिखीं और हरखू ने नाव यमुना से होते हुए गंगा में बढ़ा दी, क्योंकि नाव गंगा नदी के तट से ही चली थी और राकेश जी की गाड़ी वहीं खड़ी थी।

बच्चे ढेर सारी सेल्फी और फ़ोटो लेने में व्यस्त थे। इधर, राकेश की आंखें बंद हो गईं, जैसे वे झपकी ले रहे हों। उनके कान में हरखू की बात रह-रह कर गूंज रही थी। 'क्या साहब दो धाराओं में नाव चलाएंगे, आज तक कहीं किसी से भी दो धाराओं में नाव चली है, जो आपसे चलेगी।'

उन्हें लगा, अनजाने ही हरखू ने उन्हें जीवन की सच्चाई से रूबरू करा दिया है। क्या हो गया है उन्हें आजकल। वे सोचने लगे उनके हृदय में भी तो प्रेम की नदी बह रही है। गंगा और यमुना की धाराओं सी दो नदियां। जीवन जैसे नौका हो, जिसे वे दोनों धाराओं के बीच में चलाने का प्रयास कर रहे हैं। यह जो इंटरनेट मीडिया है, उसमें वे प्रेम के वर्चुअल संगम में लगातार गोता लगा रहे थे। वे अपने विचारों की नाव कभी गंगा में चला लेते तो कभी उसे यमुना में उतार देते। फेसबुक की वर्चुअल नदी में वे हृदय को संगम बनाए हुए थे और लगातार ज़िंदगी की नाव खेने में लगे थे। नतीज़ा नाव स्थिर ही नहीं हो रही थी। बाहर से तो किसी को कुछ नज़र नहीं आता, लेकिन वे भीतर ही भीतर उथल-पुथल में डूबे रहते। कभी नींद नहीं आती तो कभी बेचैनी होती। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि यह वर्चुअल रिश्तों का भंवर जाल उन्हें कहां ले जा रहा है। कभी वे ख़्वाबों और ख़यालों की दुनिया में उतर जाते तो कभी अपने पुराने रिश्तों में संगम नहा लेते और जब हक़ीक़त में जी रहे होते, तो गंगा जैसी पार्वती थी उनके साथ। वे इसी उधेड़बुन में खोए थे कि अचानक हरखू बोला, 'क्या साहब अब नाव नहीं चलाएंगे, देखिये किनारा आने वाला है।' और जैसे वे तंद्रा से जाग उठे हों, 'हां क्यों नहीं चलाऊंगा, आज तुम्हारे साथ नाव चला कर सचमुच मैंने गंगा स्नान कर लिया हरखू।' इतना कहकर वे चप्पू पकड़ कर बैठ गए। हरखू बोला, 'अरे साहब, अब तो आप बहुत अच्छा चप्पू चला रहे हैं।'

राकेश जी हंसे, 'अरे हरखू, तुम्हीं ने तो कहा था कि दो धाराओं में नाव नहीं चलती। सो यहां चला रहा हूं गंगा की धारा में और नाव आराम से चल रही है।' 'क्या साहब आप भी कैसी बात करते हैं, हम अनपढ़ आदमी आपको क्या समझाएंगे।'

वे हंसे, 'हरखू ज़िंदगी के जो पाठ बड़े-बड़े प्रोफ़ेसर नहीं पढ़ा सकते, वे यह नदी की धारा और हरखू पढ़ा देते हैं।'

इतना कह कर वे चप्पू चलाने लगे। उनके हृदय में चल रही विचारों की नाव भी जैसे अब एक ही नदी गंगा में तैर रही थी।

किनारा आ चुका था। राकेश जी ने हरखू को किराए के पांच की जगह सात सौ रुपये दिए और फिर पांच सौ अलग से देते हुए बोले, 'यह तुम्हारा इनाम है, यह बताने के लिए कि दो धारा में नाव नहीं चलती। आज तक कहीं किसी से भी दो धारा में नाव चली है, जो आपसे चलेगी।' हरखू की आंखें श्रद्धा से नम हो गईं और उसने देखा राकेश जी भी रूमाल से अपनी आंखें पोंछते से नाव से उतर रहे हैं। नीचे उतर कर हरखू हाथ जोड़े खड़ा था, 'साहब आते रहिएगा, आपसे ही हमारी रोज़ी-रोटी है।'

राकेश जी ने नम आंखों से उसे देखा जैसे कह रहे हों और तुम जैसे खेवइयों से हम साधारण इंसानों की ज़िंदगी है। जिस तरह भगवान राम को केवट ने नाव से नदी पार कराई थी, तुमने भी आज मुझे अपनी नाव से जीवन सरिता पार करा दी है। •

सभी पेंटिंग्स : रनदीप दास

किताबों की दुनिया

गज़ल, गीत, नज़्म और कविता का गुलदस्ता

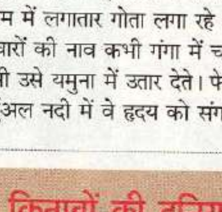

पुस्तक : चमन-चमन के फूल
संपादक : नीतू सुदीप्ति नित्या
प्रकाशक : साहित्य केंद्र प्रकाशन, नई दिल्ली

हाल में युवा साहित्यकार और साहित्यप्रीत वेबसाइट की संपादक नीतू सुदीप्ति 'नित्या' के संपादन में 'चमन-चमन के फूल' पुस्तक प्रकाशित हुई है। यह एक साझा काव्य संग्रह है, जिसमें गीत, गज़ल, नज़्म और कविताएं शामिल हैं। इसमें न सिर्फ़ हिंदी भाषी क्षेत्र के रचनाकार शामिल हैं, बल्कि अहिंदी भाषी क्षेत्र के कवियों की रचनाएं भी संकलित की गई हैं, इसलिए पुस्तक का नाम अनुकूल है। संग्रह में सबसे पहला स्थान दिया गया है-बेलगांव कर्नाटक की रहने वाली डॉ. राजश्री तिरवीर की गज़लों को। प्रेम के भावों से पगी तिरवीर की गज़लें किसी भी पाठक के मन को छू जाएंगी। ग़ज़लों के माध्यम से उन्होंने बताया कि कोई भी व्यक्ति ग़लती तो कर सकता है, लेकिन एहसास होते ही उसे अपनी गलती के लिए क्षमा मांग लेनी चाहिए। डॉ. विभा माधवी अपनी ग़ज़लों के माध्यम से समाज और गुज़रे वक्त के बारे में बताने के अलावा, अख़बार में छपी ख़बरों की हक़ीक़त बयां की है। रचनाकार सिद्धेश्वर ने अपनी नज़्मों में वक्त की क़ीमत के अलावा, महामारी कोरोना के समय मानव वेश में समाज के लुटेरों और भ्रष्ट हो चुकी जनता का कड़वा सच सामने लाया है। माला वर्मा की कविताएं 'कुम्हार' और 'सूरज की चाह' इस संकलन की श्रेष्ठ रचनाएं हैं। पुष्पा जमुआर की कविताएं 'धूल हूं मैं', 'चल दिया', 'बिटिया', 'प्रवाह' कविताएं गूढ़ अर्थ रखने के बावजूद सरल हैं। स्थान की कमी के कारण सभी रचनाओं के बारे में बताना कठिन है। पहले बताए गए रचनाकारों के अलावा, संग्रह में शामिल अवधेश कुमार, डॉ. सच्चिदानंद प्रेमी, प्रवीण कुमार आर्य, सेवा सदन प्रसाद, अरुण निशंक की विशेष अर्थ वाली रचनाएं भी पाठकों को बांधकर रखने में सक्षम हैं। •

स्मिता सिंह

कहानी

लास्ट कॉल

बात वही है कि देखने का नज़रिया बदलते ही सब कुछ बदल जाता है, रूमानियत, प्यार-मोहब्बत, ख़्वाब-ख़्याल इश्क़-मोहब्बत न होकर 'मी टू' हो जाते हैं. ट्रोलिंग के केस बन जाते हैं. ख़ैर आज उसने फ़ैसला कर लिया था कि वो इस मनःस्थिति से बाहर निकलेगा. चाहे जो भी हो, उस परिस्थिति का सामना करेगा. वो आज रुचि को ज़िंदगी की लास्ट कॉल ज़रूर करेगा.

मुरली मनोहर श्रीवास्तव

कोई तीन महीने परेशान रहने के बाद आज उसने फ़ैसला किया था कि वह रुचि को कॉल करेगा. लेकिन इस फ़ैसले के बाद भी उसकी हिम्मत कॉल करने की नहीं हो रही थी. कहीं रुचि ने डांट दिया, कुछ उल्टा-सीधा कह दिया, उससे ढंग से बात न की तो... उसे डर था कहीं ऐसा न हो कि बात और बिगड़ जाए. सच तो ये है कि उसके और रुचि के रिश्ते के इस कटु मोड़ पर आ जाने के लिए ज़िम्मेदार वही था.

ऐसा वह कई बार सोच चुका था, लेकिन फोन करने की हिम्मत जुटाने के बाद भी वह कॉल नहीं लगा पाता था.

यक़ीनन रुचि उसकी पत्नी नहीं थी, मगर... उफ़! पत्नी से बात करने में किसी को कभी कुछ सोचना ही नहीं पड़ता. भले ही कितनी भी लड़ाई हुई हो, दोनों को यह एहसास तो होता है कि इस मोड़ पर किस तरह बात करके ज़िंदगी की उलझन सुलझा सकते हैं. लेकिन यह रिश्ता तो पति-पत्नी का नहीं था, न ही दोनों के बीच कोई बंधन था. लेकिन कोई रिश्ता तो ज़रूर हो चला था दोनों के बीच, जिसके बिगड़ जाने से वह गिल्ट में जी रहा था और परेशान था. क्या फ़र्क़ पड़ता है किसी के ख़ुश या नाराज़ होने से जब दोनों की ज़िंदगी के रास्ते ही अलग हैं. मगर नहीं, कहीं कोई फ़र्क़ ही नहीं पड़ता, तो वह कुछ दिनों से इतना परेशान क्यों है?

कब उसे रुचि पर इतना भरोसा हो गया कि वह उसके साथ अपनी ज़िंदगी के दुख-दर्द बांटने लगा. रुचि उसके ऑफिस में काम करती थी. गुड मॉर्निंग, हैप्पी बर्थडे और हैप्पी न्यू ईयर से होते हुए बातें बढ़ चली थीं.

राकेश की ज़िंदगी में कहीं कोई कमी नहीं थी. शादीशुदा भरा-पूरा जीवन, जिसे वह बड़े ही जोश के साथ जी रहा था... अपने जीवन में वह बेहद ख़ुश था. ख़ुश होता भी क्यों नहीं, उसकी पत्नी वल्लरी बला की ख़ूबसूरत थी, जिसे उसने ख़ुद पसंद किया था... जिसे वह बेहद प्यार करता था. दो छोटे-छोटे बच्चे, घर पहुंच जिनके बीच वह सब कुछ भूल जाता.

और रुचि... उसे ज़िंदगी में क्या कमी थी.

बातों-बातों में वह जान चुका था कि रुचि की लव मैरिज है. दोनों एक-दूसरे को प्यार करते हैं और साथ ज़िंदगी बिताने को तैयार होते हैं, तभी तो लव मैरिज होती है.

लेकिन नहीं ज़िंदगी में सब कुछ होना और सब कुछ होने का भ्रम होना दो अलग बातें हैं. रुचि का स्वभाव उसका राकेश से घुल-मिल कर बातें करना राकेश को न जाने क्यों अच्छा लगने लगा था. वह अनजाने ही रुचि के प्रति आकर्षण का अनुभव करने लगा था.

उसने कई बार हंसी-हंसी में रुचि को यह बात बताई भी थी और उसने भी इसे हंसी में टाल दिया था.

वस्तुत: रुचि के नेचर, उसके बातचीत करने की मधुरता ने राकेश को दीवाना बना दिया था. वह रात-दिन बस रुचि के ख़्यालों में खोया रहता.

यह ज़िंदगी भी अजीब है. आप अपने भीतर कुछ भी सोचते रहिए और चाहे जैसे जीते रहिए, जब तक सामाजिक सीमाएं नहीं लांघते, कहीं कोई फ़र्क़ ही नहीं पड़ता.

राकेश को इतना पता था कि शादीशुदा जीवन की पहली शर्त है ईमानदारी और नैतिकता. उसने अपनी पत्नी से वादा किया था कि मेरी ज़िंदगी में तुम्हारे सिवा कोई कभी नहीं आएगा और वह अपने इस वादे को बड़ी ही ईमानदारी व शिद्दत से निभा रहा था. लेकिन रुचि उसकी ज़िंदगी में भावनात्मक रूप से तो आ ही गई थी. न जाने क्यों उसे अपनी ख़ुशियां उसके साथ बांटकर बेहद ख़ुशी होती. वैसे ही घर-गृहस्थी में कोई तनाव होने पर जब वह उदास होता, तो रुचि ताड़ लेती और कारण जाने बिना दम न लेती. फिर कहती, ''सब ठीक हो जाएगा, भगवान पर भरोसा रखो.''

सच तो यह था कि बड़ी से बड़ी निराशा भी रुचि की मुस्कुराहट और हंसी में खो जाती और उससे बात करते ही राकेश के दुख-दर्द मिट जाते.

धीरे-धीरे वह रुचि के साथ फैंटेसी भी करने लगा. करोड़ों लोग फैंटेसी में जीते हैं. स्त्री हो या पुरुष कोई भी एक तरह सा जीवन जीते-जीते बोर हो जाता है और वह अपनी ज़िंदगी जीने के लिए ढेरों फैंटेसी करता है. वह अपनी छोटी-छोटी फैंटेसी भी रुचि के साथ शेयर करता और रुचि हंसती. वह कभी किसी बात का बुरा नहीं मानती.

वह बेहद सुलझे और खुले विचारों की थी. इतना ही नहीं, उसके पति भी खुले विचारों वाले पुरुष थे, जो ऑफिस के माहौल को जानते-समझते थे. रुचि बड़ी आसानी से अपने किसी भी सहकर्मी को राहुल से मिला देती और उसके पति राहुल भी सभी से बड़ी बेबाक़ी से मिलते. वस्तुतः आधुनिक जीवन में व्यवहारकुशलता सफल जीवन का एक अभिन्न अंग है. जब पति-पत्नी एक-दूसरे पर अटूट विश्वास करते हैं, तो क्या फ़र्क़ पड़ता है कि रुचि के कितने सहकर्मी हैं. ऑफिस में काम करना है, तो यह सब तो चलता रहेगा.

और बस इसी माहौल में धीरे-धीरे राकेश न जाने कौन-कौन-सी बेसिर-पैर की फैंटेसी रुचि से शेयर करता चला जा रहा था.

हर बात की एक लिमिट होती है और फैंटेसी लिमिटलेस. वह अपनी फैंटेसी में आए दिन नैतिकता की सीमा पार कर रहा था और रुचि उन्हें अनदेखा कर रही थी.

अचानक एक दिन रुचि ने राकेश से बिना कुछ कहे दूरी बना ली थी और राकेश परेशान हो गया था.

कुछ भी तो नहीं बदला था ज़िंदगी में. रुचि उसकी कोई रिश्तेदार तो नहीं थी कि उससे बात करना ज़रूरी था. स्त्री पुरुष से अधिक समझदार होती है. राकेश की बढ़ी हुई इच्छाएं रुचि समझ रही थी. वह उसके और क़रीब आना चाहता था. वो रुचि को पा लेना चाहता था. उसे छूना चाहता था. यह किसी के जीवन में व्यक्तिगत फैंटेसी तक तो ठीक है, लेकिन उसे व्यवहार में बदल देने की कोशिश न जाने कितनी ज़िंदगी बर्बाद कर देगी. रुचि को इसका आभास था. इतना ही नहीं. वह भी स्त्री थी और राकेश का व्यक्तित्व कोई कम प्रभावशाली नहीं था. उस पर राकेश का बेबाक़ी से खुलते चले जाना और बिना उसे छुए ही अपनी फैंटेसी में उसके साथ कुछ कर गुज़रने की ढेर सारी अधूरी हसरतों को उसे बताना उसे भीतर तक हिला रहा था. वह भी

तो न जाने क्या-क्या और कैसे अजीब से सपने देखने लगी थी. उसका चेहरा भी तो राकेश से बात करते-करते लाल होने लगा था. वह भी तो राकेश से बातें करते हुए अपने भीतर पिघल जाती.

न जाने कब और कैसे वह राकेश की बेबाक़ी से डर गई थी. नहीं, इसके आगे बातें नहीं हो सकतीं, क्योंकि कुछ बातें सपनों में ठीक हैं हक़ीक़त में नहीं. इन सबके बाद भी रुचि यह नहीं चाहती थी कि वह किसी के ख़्वाब को छीन ले.

लेकिन जब राकेश की फैंटेसी उसे भी भीतर तक उत्तेजित करने लगी, तो रुचि को सोचना पड़ा. उसने बड़ी ही सफ़ाई से अपना रास्ता बदल लिया. यहां तक कि उसने पास की किसी ऑफिस में अपना ट्रांसफर करा लिया था.

आदमी जब तक बेहोशी में रहता है, उसे कोई चिंता नहीं होती है. चिंता तो तब होती है, जब उसे होश आता है. यह जो दुनियाभर के आकर्षण हैं, हक़ीक़त को देखते ही दम तोड़ देते हैं. आज यही हुआ था राकेश के साथ. वह ऑफिस के लिए बस पकड़ने को निकला ही था कि देखा एक पीसीआर वैन पर तीन

पुलिसवाले किसी लड़के को हथकड़ी लगाए लिए जा रहे हैं. साथ में एक लेडी पुलिस भी थी. वह लड़का रो रहा था और कह रहा था, "मेरी ज़ंजीर खोल दो, हाथ में लगती है. मेरा अपराध इतना बड़ा तो नहीं है..." लेकिन कोई उसकी बात नहीं सुन रहा था. तभी जब पीसीआर वैन निकलकर जाने लगी, तो उसने जिज्ञासावश पूछ लिया, "इसने क्या किया है?"

जब से राकेश ने पुलिसवाले का जवाब सुना है, तब से वह बेहद परेशान है. पुलिसवाले ने कहा था, "यह किसी को एकतरफ़ा प्यार करता है. ढेर सारे मैसेज भेजना, कॉल करना, ट्रोल करना और न जाने क्या-क्या?"

राकेश परेशान इसलिए था कि अचानक उसे होश आ गया था. उसका दिमाग़ बड़ी तेज़ी से काम कर रहा था. वो अच्छी तरह जानता था कि आज सभी क़ानून स्त्रियों के हक़ में हैं. कहीं ग़लती से किसी ने उसकी झूठी शिकायत भी कर दी, तो... और इसके आगे वो सोच नहीं पा रहा था और उसके दिमाग़ में बार-बार रुचि का नाम उभर रहा था.

किसी भी अच्छे से अच्छे इंसान का मन बदलने में कितनी देर लगती है. रही किसी स्त्री की बात, तो किसी भी पराई स्त्री पर कितना भरोसा किया जा सकता है. कौन कब बदल जाए, कहा नहीं जा सकता. कहीं कुछ ऊंच-नीच हो गई, तो वो किसी को मुंह दिखाने के लायक नहीं रहेगा. क्या मुंह लेकर घर जाएगा? वल्लरी, जिसे वह जान से ज़्यादा प्यार करता है, उसके बारे में क्या सोचेगी?

आज की तारीख़ में हर बात का रिकॉर्ड है. यहां तक कि किसी की कॉल डिटेल भी निकाली जा सकती है, ट्रैक की जा सकती है. बस यही वह प्वॉइंट था, जो उसे बार-बार रुचि को कॉल करने से रोक रहा था. वो रुचि के साथ बातों-बातों में न जाने कितनी नैतिक सीमाएं लांघ चुका था.

यह सच है कि उसके फेवर में सिर्फ़ एक बात जाती थी. उसने शारीरिक रूप से कोई भी अनैतिक काम नहीं किया था, लेकिन एक बार इल्ज़ाम लगने के बाद सफ़ाई उसे ही देनी पड़ती. आरोप लगानेवाले को कुछ नहीं करना पड़ता, ख़ासकर स्त्री यदि किसी पुरुष के खिलाफ़ कोई शिकायत कर दे तब...

आज तीन महीने बीत गए थे. सब कुछ शांत चल रहा था, सिवाय एक बात के, केवल उसका मन अशांत था. वो होश में आने के बाद लगातार गिल्ट कॉन्शस से गुज़र रहा था. आख़िर उसने अपनी बातें, अपनी फैंटेसी किसी से भी शेयर क्यों की. जिसे हम इश्क़ समझ लेते हैं, वह कभी-कभी एकतरफ़ा आकर्षण भी तो हो सकता है. जो बातें देखने-सुनने में बहुत रूमानी और दिल को सुकून देती लगती हैं, वे ही अगर देखनेवाले के नज़रिए में फिट न बैठें, तो ग़ैरक़ानूनी भी हो सकती हैं. यहां तक कि लेडीज़ प्रोटेक्शन एक्ट में किसी महिला की तारीफ़ करना भी क़ानूनन अपराध की श्रेणी में आता है, जबकि आम ज़िंदगी में हम सभी किसी के भी अच्छा लगने पर दिल खोलकर उसकी तारीफ़ करते हैं और अमूमन कोई स्त्री इस बात का बुरा भी नहीं मानती है.

बात वही है कि देखने का नज़रिया बदलते ही सब कुछ बदल जाता है, रूमानियत, प्यार-मोहब्बत, ख़्वाब-ख़्याल इश्क़-मोहब्बत न होकर 'मी टू' हो जाते हैं. ट्रोलिंग के केस बन जाते हैं. ख़ैर आज उसने फ़ैसला कर लिया था कि वो इस मनःस्थिति से बाहर निकलेगा. चाहे जो भी हो, उस परिस्थिति का सामना करेगा. वो आज रुचि को ज़िंदगी की लास्ट कॉल ज़रूर करेगा.

उसने नंबर डायल किया और उधर से जानी-पहचानी मीठी आवाज़ आई, "हैलो."

राकेश के कानों में जैसे शहद घुल गया. दोनों एक-दूसरे के नंबर क्या, आवाज़ और टोन तक पहचानते थे. राकेश ने कहा, "हैप्पी दिवाली, बहुत दिनों से तुमसे बात ही नहीं हुई सो कुछ अजीब-सा लग रहा था, इसलिए कॉल कर दिया."

रुचि ने भी बिल्कुल नॉर्मल तरीक़े से हंसते हुए बात की, जैसे कोई बात ही न हो.

इसके बाद राकेश ने अपने दिल की बात कही, जिसने उसका जीना मुश्किल किया हुआ था और जिसके चलते डर के मारे उसका बुरा हाल हुआ जा रहा था.

"रुचि बहुत अधिक गिल्ट फील हो रहा था, इसलिए तुम्हें कॉल किया है."

वह हंसी जैसे कोई बात ही न हो. जैसे उसने राकेश को अनसुना कर दिया हो. वह बोली, "मेरे पास टाइम ही नहीं होता कुछ पढ़ने और देखने का. मैं कुछ देख ही नहीं पाती."

इतना सुनना था कि राकेश की जान में जान आई. हिम्मत वापस लौटी.

"थैंक्स रुचि, बस तुमसे बात करके बहुत हल्का महसूस कर रहा हूं. न जाने क्यों तुमसे बात करके बहुत अच्छा लगता है, इसलिए कॉल कर लेता हूं. चलो फिर बात होगी."

उसने कहने को कह तो दिया था, लेकिन वो जानता था यह उसकी लास्ट कॉल थी. अभी ज़िंदगी में कुछ बिगड़ा नहीं था.

और रुचि, वह जानती है कि न जाने कितने लोग सुबह से शाम तक उसके बारे में क्या-क्या सोचते हैं, फैंटेसी करते हैं, राकेश ने बस यही तो किया था कि अपने ख़्वाब उसे बता दिए थे. उसे कभी छूने की कोशश नहीं की थी. उसे पता था राकेश जैसा ज़िम्मेदार व्यक्ति भले ही कैसे भी ख़्वाब देख ले, पर उसे पूरा करने की हिमाकत कभी नहीं करेगा. वह पढ़ी-लिखी मॉडर्न लड़की थी. उसके पास इन बातों में उलझने के लिए समय कहां था. वह अपनी भावनाओं को संभालना और परिस्थितियों को हैंडल करना जानती थी. उसे पता था कि कब, किससे, कितने क़रीब आना है और कब दूर चले जाना है.

सपनों की बैसाखी

मुरली मनोहर
श्रीवास्तव

मिस्टर सैमुअल ने मन ही मन सोचा, देखो कितनी टेक्निकली डॉक्टर रूही ने मेरे केस को संभाला है. वह तो मन ही मन डॉक्टर रूही से अपने फेसबुक अफेयर को लेकर शेयर किए क़िस्से से डर गए थे. कहीं डॉक्टर रूही ने मेरा फेसबुक क़िस्सा शेयर कर दिया, तब क्या होगा. आज तो उसका क्लाइमेक्स था, लेकिन थैंक गॉड उन्होंने अपना प्रॉमिस पूरा किया.

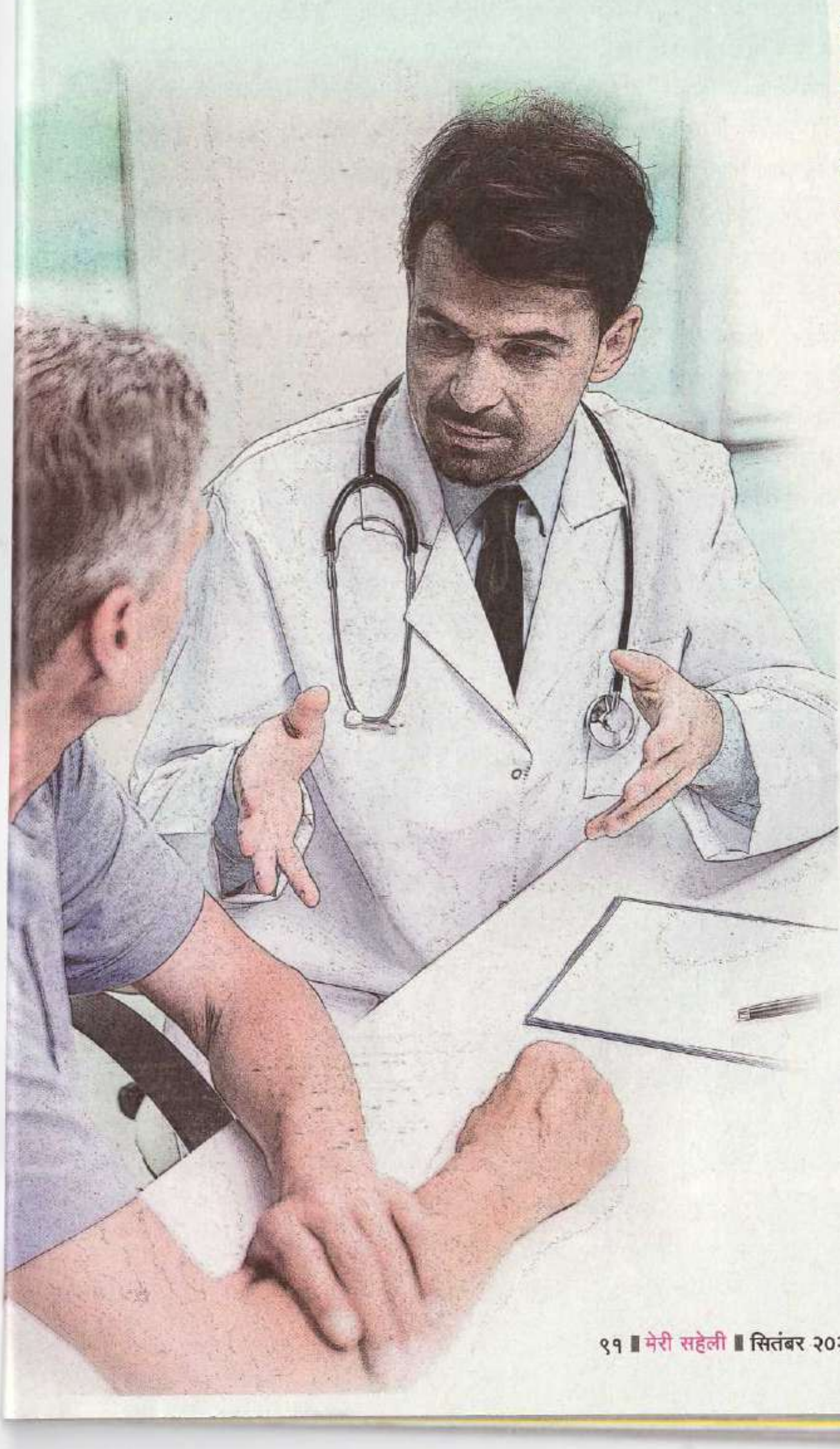

पूरे हॉस्पिटल में हड़कंप मचा हुआ था. आख़िर बेड नंबर १७ का मरीज़ अचानक कहां गायब हो गया. उससे बड़ी बात यह कि जब वह यहां लाया गया था, तो बैसाखी के सहारे चल कर आया था, तो फिर वह दसवीं मंजिल से गया तो कहां गया. उसकी उम्र भी कोई कम नहीं थी. मेडिकल फॉर्म के रिकॉर्ड के हिसाब से ७० साल. इतने नामी अस्पताल में अगर वह मरीज़ गायब हो गया, तो कितनी बदनामी होगी. चीफ एडमिनिस्ट्रेटर राजेश ने खिड़की से झांक कर देखा. दसवीं मंजिल से नीचे कुछ साफ़ दिखना भी मुश्किल था, लेकिन बंद खिड़की इस बात का इशारा कर रही थी कि कोई यहां से कूद नहीं सकता. प्राइवेट और जनरल वॉर्ड के वॉश रूम अच्छी तरह चेक किए जा चुके थे. वहां कोई नहीं मिला.

सुबह के पांच-साढ़े पांच बजे जब आधी दुनिया सो रही होती है और बाकी आधी जाग कर सोने का बहाना कर लेटी रहती है, ऐसे में आख़िर हॉस्पिटल में जल्दी उठ कर कोई करेगा भी क्या. आजकल जब से ऑटोमाइजेशन बढ़ गया है, तब से गैलरी खाली रहती है. लिफ्ट ऑपरेटर भी अब हटा दिए गए हैं. शिफ्ट चेंज का टाइम होने से

सपनों की बैसाखी

मॉर्निंग स्टाफ आने वाले थे और नाइट वाले फ्रेश होकर जाने की तैयारी में लगे थे, सो कोई यह जवाब देने की हालत में नहीं था कि यहां से कौन आया, कौन गया.

राजेश की हालत अपने बाल नोंचने जैसी हो गई थी. अभी आठ बजते इस पेशेंट के घरवाले आ जाएंगे. मैं क्या जवाब दूंगा और इसके बाद पुलिस इंक्वायरी, मैनेजमेंट... ओह गॉड. उनका सिर घूम गया. तभी स्टाफ नर्स ने कॉफी दी, "सर प्लीज़, रिलैक्स. सब ठीक हो जाएगा. आप कॉफी पीजिए."

राजेश को सचमुच इस समय कॉफी की ज़रूरत महसूस हो रही थी और जैसे ही राजेश ने कॉफी होंठों से लगाई कि कप उसके हाथ से छूटते-छूटते बचा. देखा तो सामने से उसके पेशेंट मिस्टर सैमुअल चले आ रहे हैं.

ख़ैर उसने ख़ुद को कंट्रोल किया और आश्चर्य से उन्हें देखने लगा. उसे जैसे अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हुआ. सैमुअल बिना किसी सहारे के आराम से चले आ रहे थे. उसने चैन की सांस ली और ख़ुद को संयत करते हुए कहा, "गुड मॉर्निंग सर, हाऊ आर यू फीलिंग नाऊ?" वैसे यह सवाल तो सैमुअल को राजेश से पूछना चाहिए था, लेकिन वे मुस्कुराते हुए बोले, "आई एम फाइन. आप देख तो रहे हैं."

"ओह दैट्स राइट. सर आप कहां थे? हम लोग आधे घंटे से आपको ढूंढ़ रहे हैं."

"ओह! आई एम सॉरी, वो ज़रा नीचे वॉकिंग के लिए गया था. कई दिनों से सोच रहा था आज रहा नहीं गया, तो बस नीचे लॉन का एक चक्कर लगा आया. प्लीज़ आप बैठिए, मैं अब आराम करूंगा." इतना कहते हुए सैमुअल बेड पर लेट कर बस पांच मिनट में खर्राटे भरने लगे.

यह देखकर वहां खड़े सारे स्टाफ को पसीना आ गया. सिस्टर ने तो नब्ज़ छू कर देखा, तब उसे भरोसा हुआ. मॉर्निंग ड्यूटी वाले जूनियर डॉक्टर जतिन ने तो सीनियर डॉक्टर को इमरजेंसी कॉल लगा कर बड़े सरप्राइज़ के साथ बुला लिया.

"सर प्लीज़, जल्दी आइए सैमुअल जी का चेकअप करना है." सीनियर डॉक्टर पारीख पहुंचे, तो उनकी समझ में कुछ नहीं आया. मिस्टर सैमुअल अपने बेड पर आराम फरमा रहे थे और पूरा स्टाफ उन्हें घेरे खड़ा था. उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा. पेशेंट की नब्ज़ देखी, माथे पर हाथ रखा और पूछा, "क्या हुआ जतिन, मुझे क्यों कॉल किया? ही इज़ नॉर्मल." डॉक्टर पारीख बोले.

डॉक्टर जतिन कुछ कहते कि राजेश बोले, "सर, आपको मैंने कॉल किया है, डॉक्टर जतिन ने नहीं. एक्चुअली नॉर्मल होना तो ठीक है, लेकिन कोई सात दिन में इतना नॉर्मल कैसे हो सकता है कि बैसाखी छोड़ कर दौड़ने लगे."

डॉक्टर पारीख आश्चर्य से पूछे, "क्या हुआ राजेश, मैं कुछ समझा नहीं."

वह एक प्राइवेट वॉर्ड था. एक रूम में दो बेड थे दूसरा अभी खाली था. सब वहीं थोड़ा दूर हट कर खड़े थे. डॉक्टर पारीख बड़े ध्यान से सुन रहे थे और राजेश ने जो क़िस्सा बताया, उसने डॉक्टर पारीख को चौंका दिया.

"हूं तो तुम कह रहे हो यह पेशेंट अभी २० मिनट पहले नीचे से चल कर अपने बेड पर आकर लेटा है. ठीक है मैं मान लेता हूं ऐसा हो तो सकता है, लेकिन रेयर ऑफ द रेयरेस्ट केस में ही यह संभव है. चलो यह बेहतर हुआ है कि किसी पेशेंट के साथ. लेकिन अभी इस बारे में किसी से ज़्यादा बात नहीं करते. मुझे एक बार फिर सभी दवाई व रिपोर्ट्स देख लेने दो. और हां राजेश सुनो, तुम साएक्रेटिस्ट रूही को भी बुला लो. वो भी सैमुअल जी के केस में शुरू से इन्वॉल्व रही हैं. हम लोग साथ बैठकर डिस्कस करते हैं, तब किसी कन्क्लूज़न पर पहुंचेंगे."

"जैसा आप ठीक समझें सर, पर सच कहूं तो सैमुअल जी को यहां न देखकर मेरी तो जान ही निकल गई थी. थैंक गॉड वो सही हैं." राजेश ने कहा.

इधर जतिन ने केस की नज़ाकत देख मैडम रूही को कॉल कर दिया था. वो भी बस १० मिनट में पहुंच गई थीं. वो हॉस्पिटल के पास ही कहीं रहती थीं.

मुस्कुराता चेहरा, गोरा रंग, उम्र कोई ४५, संतुलित भाव-भंगिमा और एक अजीब-सी गंभीरता. हां, अपनी आदत के अनुसार लाइट कलर की पिंक साड़ी में थीं.

"साएक्रेटिस्ट रूही आप ही कुछ बताएं इस पेशेंट के बारे में, क्योंकि डॉक्टर पारीख कुछ कह पाने की स्थिति में नहीं हैं." राजेश बोले.

इधर साढ़े सात बजते ही सैमुअल एक झपकी लेकर जाग चुके थे, लेकिन जैसे ही उन्होंने अपने आसपास इतने लोगों की भीड़ देखी और राजेश की आवाज़ सुनी, उनके कान खड़े हो गए. उन्होंने ख़ामोशी से नींद का बहाना किए हुए चुपचाप लेटे रहना ही बेहतर समझा.

डॉक्टर रूही ने कहा, "देखिए एक

साएक्रेटिस्ट के नाते मैं सिर्फ़ इतना कह सकती हूं कि मिस्टर सैमुअल उतने बूढ़े नहीं हैं, जितना आप सोच रहे हैं.''

''आप क्या कह रही हैं मैडम. एक ७० साल का इंसान आपकी नज़र में बूढ़ा नहीं है.'' डॉक्टर पारीख बोले.

''देखिए डॉक्टर पारीख, एक साएक्रेटिस्ट के लिए किसी इंसान की फिज़िकल एज उतना अर्थ नहीं रखती जितना उसकी मेंटल एज. आप तो जानते ही हैं कि हर इंसान के भीतर चाइल्ड, एडल्ट और पैरेंट ईगो स्टेट हमेशा प्रेजेंट रहती है और वह कब, क्या व्यवहार करेगा, यह उसकी एज पर कम, ईगो स्टेट पर अधिक निर्भर करता है. मैंने मिस्टर सैमुअल को एडल्ट ईगो स्टेट से बात करते हुए पाया है, जो एक साएक्रेटिस्ट के बिहेविरल थेरेपी के लिए ईज़ी टास्क हो जाता है. ऐसे शख़्स को लंबी उम्र के लिए आसानी से प्रेरित किया जा सकता है, जो ख़ुद को बूढ़ा नहीं मानता.'' डॉक्टर रूही ने कहा.

मिस्टर सैमुअल ने मन ही मन सोचा, देखो कितनी टेक्निकली डॉक्टर रूही ने मेरे केस को संभाला है. वह तो मन ही मन डॉक्टर रूही से अपने फेसबुक अफेयर को लेकर शेयर किए क़िस्से से डर गए थे. कहीं डॉक्टर रूही ने मेरा फेसबुक क़िस्सा शेयर कर दिया, तब क्या होगा. आज तो उसका क्लाइमेक्स था, लेकिन थैंक गॉड उन्होंने अपना प्रॉमिस पूरा किया.

जब डॉक्टर रूही से बातचीत शुरू हुई थी, तो वे थोड़ा हिचकिचा रहे थे. लेकिन जब रूही ने उनका हाथ अपने हाथ में लेकर दबाते हुए कहा था, ''यू मे ट्रस्ट मी, मैं आपकी फीलिंग समझ सकती हूं. यक़ीन रखिए आपकी बातें मुझसे आगे नहीं जाएंगी. यह हमारे प्रोफेशन का प्रिंसिपल है कि हम किसी पेशेंट की केस हिस्ट्री शेयर नहीं करते.''

और तब वो खुलते गए थे. उन्होंने लैपटॉप पर स्वाति की फोटो और उसके साथ पिछले कई साल से चल रही चैट के कुछ अंश भी दिखाए थे. फिर कहा था, ''यू सी हाऊ ब्यूटीफुल शी इज़. मैं इसे कॉलेज के टाइम से जानता हूं, नो चेंज.''

यहां तक तो ठीक था. सोचने वाली बात यह थी कि वो इसके साथ अपनी ज़िंदगी के वो सीक्रेट भी शेयर कर रहे थे, जो वे अपनी वाइफ से भी शेयर नहीं करते. यहां तक कि वो स्वाति से अपनी फैंटेसी भी डिस्कस करते थे.

मज़े की बात यह थी कि डॉक्टर रूही ने उनके मामले में कोई टोकाटाकी नहीं की थी. वो बस सब कुछ सुन रही थीं. कोई नैतिक-अनैतिक बात नहीं, कोई गिल्ट फीलिंग से सरोकार नहीं. इस उम्र के आदमी को समझाने से अधिक उसे समझने की ज़रूरत होती है. इतना ही नहीं, हर इंसान का वैल्यू सिस्टम उसका व्यक्तिगत मामला है. डॉक्टर रूही से उन्होंने आज की होने वाली घटना शेयर की थी.

कल रात स्वाति के बेटे की शादी थी और बहू की विदाई के बाद वह इस रूट से गुज़रने वाली थी. स्वाति के साथ उसकी कार में उसकी सहेलियां होंगी, यह बात उसने बताई थी. यह भी कहा था कि यदि वो गेट पर आ सकें, तो दो मिनट गाड़ी रोक कर मुलाक़ात हो सकती है.

सपनों की बैसाखी

सपनों की बैसाखी

और मिस्टर सैमुअल ने अपने भीतर ढेर सारी हिम्मत पैदा कर सुबह बैसाखी छोड़ स्वाति से मिलने का हौसला पैदा कर लिया था. वैसे भी वे इस दिन के लिए चुपचाप दस मिनट रोज़ बिना बैसाखी के चलने की प्रैक्टिस कर रहे थे. उनका प्लान था कि बस दस मिनट में मिलकर वापस आ जाएंगे. यह अस्पताल और रोड उनके लिए नई नहीं थी, लेकिन कुदरत को तो कुछ और ही मंज़ूर था. उनका दस मिनट का प्लान आधे घंटे में बदल गया था. वे अति उत्साह में पांच बजे ही गेट पर पहुंच गए थे.

इस क्लाइमेक्स की कहानी उन्हें डॉक्टर रूही को सुनानी थी, लेकिन दिलचस्प यह रहा कि डॉक्टर रूही ने बड़ी ही ख़ूबसूरती से मेडिकल की भाषा में उनके जीवन के सच को पर्दे के पीछे ढंक दिया था.

खैर, जैसे ही सैमुअल जी को एहसास हुआ कि मामला ठीक चल रहा है, उन्होंने बिस्तर से पैर निकाले और एक बार फिर स्लीपर पहन कर वॉशरूम चल पड़े. सब उन्हें आश्चर्य से देखने लगे. उन्होंने सभी को इस तरह आश्चर्य से देखते देखा, तो अनभिज्ञ बनते हुए पूछा, "अरे डॉक्टर साहब इतने सारे लोग. क्या हुआ सब ठीक तो है? और आप लोग मुझे आश्चर्य से क्यों देख रहे हैं?"

अब डॉक्टर पारिख की बारी थी, "ओह मिस्टर सैमुअल आप ठीक तो हैं. सुबह आप बेड पर नहीं थे, सो हम लोग चिंतित हो गए थे."

"क्या डॉक्टर साहब, आप भी कमाल करते हैं. देख नहीं रहे कितना बढ़िया मौसम है. मेरा मन हुआ थोड़ा घूम लूं, सो वॉक करने गया था." सैमुअल जी मुस्कुराते हुए बोले.

"नहीं वो तो ठीक है, लेकिन वो आपके पैर में तो..." इससे पहले कि डॉक्टर पारीख बात पूरी करते, सैमुअल जी ने कहा.

"अरे मैं आपको बताना तो भूल ही गया. आपके ट्रीटमेंट से मुझे बहुत फ़ायदा हुआ है. मैं तो बस बिना सोचे ही निकल पड़ा. मैंने सोचा इतना स्टाफ है, कहीं कोई दिक्क़त हुई, तो सिक्युरिटी से हेल्प ले लूंगा, क्यों किसी को तंग करना. अभी आता हूं." कहकर वे वॉशरूम चल दिए.

उन्हें ठीक जान कर सभी चले गए. डॉक्टर पारीख के राउंड का टाइम हो रहा था उन्हें भी जल्दी थी. बस डॉक्टर रूही बैठी थीं और जैसे ही सैमुअल जी लौटे कि उनकी नज़रें मिलीं और वे मुस्कुरा उठीं.

"हूं, कैसी मीटिंग रही सर?" डॉक्टर रूही ने पूछा.

वो मुस्कुराए, बोले, "मीटिंग क्या थी? बस आपने मेरे सपनों की बैसाखी तोड़ दी."

"क्या हुआ मैं समझी नहीं. आप तो सुबह से ही बेड पर नहीं थे." डॉक्टर रूही ने कहा.

"वही तो..." सैमुअल जी बोले, मैं मिला, "लेकिन वो मेरी स्वाति नहीं थी. उसका चेहरा तो फेसबुक से बिल्कुल अलग था. चेहरे पर झुर्रियां भी थीं. हाथ भी तो कड़े हो गए थे. डाई लगाने के बाद भी बालों की जड़ों में सफ़ेदी थी."

"ओह और क्या हुआ?" डॉक्टर रूही ने पूछा, "कुछ और बातें, कुछ रोमांस...?"

"अरे कैसा रोमांस, कौन-सी बातें... उसने तो अपनी सहेली से कहा कि यह मेरा बहुत बड़ा फैन और ब्लाइंड फॉलोअर है... कॉलेज के ज़माने से ही फॉलो करता है, लेकिन बहुत ही शरमाता है. ओके सैमू, गेट वेल सून... और बात ख़त्म." सैमुअल जी बोले. यह बताते हुए जैसे वे कुछ और युवा हो उठे थे.

"ओह और क्या हो सकता था. आपने क्या सोचा था?" डॉक्टर रूही ने जानना चाहा.

वह हंसे, "रियली फेसबुक और हक़ीक़त में बहुत फर्क है. मैडम, आपने मेरी लकड़ी और सपने दोनों की बैसाखी तुड़वा दी. अब ज़िंदगी में और कोई फैंटेसी नहीं करूंगा और थैंक्स अपना प्रॉमिस को रखने के लिए." इतना कहकर सैमुअल जी चुप हो गए.

डॉक्टर रूही हंसीं और बोलीं, "यह मेरा प्रोफेशन है. आप मुझ पर विश्वास कर सकते हैं."